JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आदिवासी किशोर विद्यार्थियों को सृजनात्मकता का उनके मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में अध्ययन

डॉ. बबीता दत्त
शोध निर्देशक
ओरिएन्टल विश्वविद्यालय
इन्दौर
ई-मेल: babitadutt@orientaluniversity.in

पुष्पेन्द्रसिंह राठौर
शोधार्थी
ओरिएन्टल विश्वविद्यालय
इन्दौर
ई-मेल:pushpendra.rathore40@gmail.com

साराशः–
वर्तमान शोध पत्र में हाईस्कुल आदिवासी किशोर विद्यार्थियों सृजनात्मकता का उनके मानसिक स्वास्थ्य का पता लगाया गया है। छात्रों के सृजनात्मकता का मूल्यांकन टोरेन्य टेस्ट द्वारा किया गया था। विद्यार्थियों की मानसिक उपलब्धि का मूल्यांकन मानकीकृत उपलब्धि परीक्षणों द्वारा किया गया। श्रीमती के.शर्मा की मानसिक स्वास्थ्य मापनी का प्रयोग किया गया है निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि हाईस्कुल आदिवासी किशोर विद्यार्थियों के मानसिक सृजनात्मकता का उनके मानसिक स्वास्थ्य के बीच महत्वपूर्ण संबंध मौजूद है। अध्ययन के नतीजों को सामान्य बनाने के लिए अधिक विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है।

प्रस्तावना

शिक्षा मानवीय शक्ति का सर्वांगीण विकास करती है। शिक्षा ही सामाजिक ,सांस्कृतिक व नैतिक विकास करती हैं शिक्षा समाज को दिशा प्रदान करती है तभी मनुष्य,समाज व राष्ट्र उन्नती की ओर अगसर होता है। प्रस्तुत अध्ययन में आदिवासी किशोर विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन किया गया है।

आदिवासी का अर्थ

आदिवासी शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है आदि + वासी । आदि का अर्थ पुरातन या मूल तथा वासी का अर्थ निवासी । आशय यह है कि आदिवासी शब्द का अर्थ भारत की सबसे प्राचीनप्रजाति। भारत की जनसंख्या का बड़ा हिस्सा आदिवासी समाज का है। भारतीय संविधान मेंआदिवासियों को अन ुसूचित जनजाति शब्द का प्रयोग किया गया है। आमतौर पर आदिवासियों कोभारत में जनजातीय लोगों के रूप में जाना जाता है।

आदिवासी मुख्य रूप से भारतीय राज्यों उड़ीसा, मध्य–प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान,गुजरात , महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल में ये अल्पसंख्यक हैं तथा पूर्वोत्तर राज्यों में ये बहुसंख्यक हैं जबकि भारतीय पूर्वोत्तर राज्यों में यह बहुसंख्यक हैं जैसे मिजोरम । भारत सरकार ने इस समुदाय को पांचवीं अनुसूची में शामिल किया गया है।

परिभाषाएँ

आर. एन. मुखर्जी के अनुसार – ''जनजाति एक वैसा मानव समूह है जिसके सदस्यों के पास आम अभिरूचि, आम भाषा, आम निवास क्षेत्र, आम सामाजिक नियम तथा आम आर्थिक पेशा होती है। ''

बोगार्ड्स के अनुसार – ''जनजातीय समूह का आधार सुरक्षा की आवश्यकता, रक्त संबंध तथा आम धर्म होता है। ''

किशोरावस्था अर्थ एवं परिभाषाएँ

किशोरावस्था मानव जीवन के सबसे कठिन, विचित्र, कठोर और तनाव की अवस्था है ।

इसमें होने वाले परिवर्तन बालक के व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं अतः शिक्षा के क्षेत्र में इस अवस्था का महत्वपूर्ण स्थान है ।

किशोरावस्था अंग्रेजी शब्द ।कवसमेबवदबम का समान्तर शब्द है यह लैटिन भाषा के कवसमेबमतम (एडोलेसियर) से आया है जिसका अर्थ है प्रजनन क्षमता का विकसित होना और

परिपक्वता की ओर बढ ना (to grow to maturity) इस अवस्था को Teenage और Beauty age व जीवन का सबसे कठिन काल कहा जाता है। अतः किशोरावस्था वह काल है, जो परिपक्वता की ओर ले जाता है ।

किशोरावस्था की परिभाषाएँ :–

हरलॉक के अनुसार –''किशोरावस्था समस्या बाहुल्य की अवस्था है ।''

डोरथी रोजर के अनुसार– '' किशोरावस्था एक काल न होकर क्रिया है जिसमें अभिवृत्तियाँ औरविश्वास प्राप्त किये जाते जो समाज में प्रभावशाली सहयोग के लिए आवश्यक है । ''

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।

तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ।।

सृजनात्मकता का अर्थ एव ं परिभाषाएँ

सृजनात्मकता षब्द अंग्रेजी क` क्रियोटिविटी से बना है। इस षब्द के समान्तर विधायकता, उत्पादन, रचनात्मक डिस्कवरी आदि का प्रयोग होता है। फादर कामिल बुल्के ने क्रियेटिव शब्द के सामान्तर, सृजनात्मक, रचनात्मक, सर्जक शब्द बनाए। डॉ. रघुवीर ने इसका अर्थ सर्जन, उत्पन्न करना, सर्जित करना, बनाना बताया है।

वस्तुतः सर्जन वह प्रक्रिया है जिसमें उपलब्ध साधनों में नवीन या अंजानी वस्तु, विचार या धारणा को जन्म दिया जाता है। सृजनात्मक से अभिप्राय है रचना संबंधी योग्यता, नवीन उत्पाद की रचना। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सृजनात्मक स्थिति अन्वेषणात्मक होती है। रूचि के अनुसार, – ''सृजनात्मकता या मौलिकता वास्तव में किसी भी प्रकार की क्रिया से घटित होती है।''

परिभाषाएँ –

स्टेन के अनुसार :– ''जब किसी कार्य का परिणाम नवीन हो, जो किसी समय में समूह द्वारा उपयोगी मान्य हो, वह कार्य सृजनात्मकता कहलाता है।''

जेम्स डेंवर :– ''अनिवार्य रूप से किसी नई वस्तु का सृजन करना है, रचना विस्तृत अर्थ में ,जहां पर नए विचारों का संग्रह हो वहां पर प्रतिभा का सृजन विशेषतः या अनुकूल न होकर स्वयं प्रेरित हो जहां पर मानसिक सृजन का आह्वान न हो।''

पूर्व में इस क्षेत्र में किये गये अध्ययन –

1. शर्मा मिनाक्षी, (2022) उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सृजनात्मकता क` प्रभाव का अध्ययन । प्रस्तावना – वर्तमान समय में तेजी से बदलती इस दुनिया में शिक्षा की धारणा में भी परिवर्तन हो रहा है। विद्यालय का कार्य केवल ज्ञान के संगठित भंडार के बने बनाए मूल्यों का स्थानांतरण करना ही नहीं है, बल्कि छात्र को इस योग्य बनाना कि वह स्वयं अपने मूल्यों का निर्माण कर सके ।
2. यादव सोनू प्रसाद (2019) छात्रों में सृजनात्मकता के विकास में अध्यापक एवं विद्यालय की भूमिका। कुछ अलग व भिन्न करने का कोशल ही सृजनात्मकता कहलाती है। संसार

के प्रत्येक व्यक्ति में कुछ अनोखा है। सृजनात्मकता का क्षेत्र भिन्न–भिन्न है। किसी में कलात्मक है तो किसी में वैज्ञानिक है। इसे समय–समय पर प्रयास से करने से विकसित किया जा सकता है। इसके लिए नियमित वातावरण चाहिए। कठोर अनुशासन में यह समाप्त हो जाती है। सृजनात्मक के तत्व हैं मौलिकता, धारा प्रवाहिता, लचीचापन तथा विस्तारण आदि ।

3. तिवारी संजीत कुमार एवं सिंह राजकुमार (2020), बिलासपुर जिले के पू.मा.शालाओं के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन । कोई भी शोध इसलिए किया जाता है कि शिक्षा के क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाली विभिन्न समस्याओं को पहचान कर उसका निदान किया जा सके और समस्या का समाधान खोजने का प्रयास किया जा सके ।

4. मणिमाला (2018) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग एव ं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकताका तुलनात्मक अध्ययन। प्राचीनकाल में माना जाता था कि बौद्धिक क्षमता वाला व्यक्ति ही सृजनात्मक हो सकता है किन्तु आज मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों से स्पष्ट है कि सृजनात्मकता बुद्धि से स्वतंत्र है। वर्तमान समय में सृजनशील व्यक्ति शिक्षा के माध्यम से सृजनात्मक शक्तियों का विकास कर सकता है।

5. आर्य डॉ. मोहन लाल एवं क ु. प्रियंका (2022) मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक दबाव के प्रभाव का अध्ययन । एक राष्ट्र अथवा समाज के लिए सबसे महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र उस समय ही उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है जबकि उसके अन्दर प्रत्येक मानव को यह सुविधा प्राप्त हो कि वहस्वतन्त्रतापूर्वक अपना उतना विकास कर सके जितना कि उसमें विकास करने की क्षमता है। प्रत्येक व्यक्ति के अंदर निहित शक्तियाँ होती हैं। जब इन शक्तियों को फलने–फूलने के अवसर मिलते हैं तो उसका विकास उसकी क्षमता के अनुसार हो जाता है, किन्तु यदि ऐसा नहीं होता तो उसका पूर्ण विकास नहीं हो पाता ।

समस्या कथन – आदिवासी किशोर विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनके मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन ।

उद्देश्य –

1. आदिवासी किशोर विद्यार्थियों में सृजनात्मकता के माध्य फलांकों का अध्ययन करना।

2. आदिवासी किशोर विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्स्थ्य के माध्य फलांकों का अध्ययन करना।

परिकल्पना–

1. आदिवासी किशोर विद्यार्थियों में सृजनात्मकता के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. आदिवासी किशोर विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्स्थ्य के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधी –

प्रस्तुत अध्ययन का प्रारूप सर्वेक्षण विधि पर आधारित है।

न्यादर्श –

अध्ययन का प्रतिदर्श याद्वच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा म.प्र. के झाबुआ जिले के विकासखण्ड पेटलावद में स्थित शासकिय विद्यालयों के कक्षा 9वी एवं 10 वी से चुना गया है। प्रतिर्दश की प्रस्तावित संख्या 90 आदिवासी विद्यार्थी है।

उपकरण का प्रयोग–

प्रस्तुत अध्ययन में सृजनात्मकता के लिए टोसेन्स टेस्ट का प्रयोग किया है। एवं श्रीमती के.शर्मा की मानसिक स्वास्थ्य मापनी का प्रयोग किया गया है । जिसमें 100 प्रश्न है।

सांख्यिकी विशलेषण –

आकडों के विशलेषण हेतु सांख्यिकी माध्य का प्रयोग किया गया। चरों के संबध की सार्थकता को 0.5 विश्वसनियता स्तर रखा गया।

आदिवासी किशोर बालक एवं बालिकाओं की सृजनात्मकता से संबधित अध्ययन करना

आदिवासी किशोर बालक एवं बालिकाओं की सृजनात्मकता से संबधित तालिका।

तालिका 01

विद्यार्थी	संख्या	माध्य(स्तर)
आदिवसी बालक	43	9.7
आदिवसी बालिक	47	9.9

तलिका 01 परीणाम :–

उपरोक्त तालिकाओं से यह ज्ञात हुआ कि आदिवासी बालकों का माध्य 9.7 है एवं आदिवासी बालिकाओं का माध्य 9.9 है जो 0.5 सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक एक आदिवासी किशोर विद्यार्थियो में सृजनात्मकता के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है स्वीकृत की जाती है।

आदिवासी किशोर बालक एवं बालिकाओं की मानसिक स्वास्थ्य से संबधित तालिका।

तालिका 02

विद्यार्थी	संख्या	माध्य(स्तर)
आदिवसी बालक	43	8.8
आदिवसी बालिक	47	6.9

तलिका 02 परीणाम :–

उपरोक्त तालिकाओं से यह ज्ञात हुआ कि आदिवासी बालकों के मानसिक स्वसस्थ्य का माध्य 8.8 है एवं आदिवासी बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य का माध्य 6.9 है जो 0.5 सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक दो आदिवासी किशोर विद्यार्थियो में मानसिक स्वास्थ्य के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष–

बालक एवं बालिकाओं के सजृनात्मकता एवं मानसिक स्वास्थ्य के आयामों जैसे – अपना सकारात्मक विकाल, वास्तविकता का ज्ञान, व्यक्तित्व समाकलन, स्वायत्त शालन समूह वाचक और वातावरण का पूर्ण ज्ञान के मध्य सार्थक अन्तर नही है क्योकि आज समाज में मानसिक स्वास्थ्य का अर्घ वास्तविकता के धरातल पर वातावरण से पर्याप्त सामंजस्य करने की योग्यता ही नही है बल्कि दैनिक जीवन में भावनाओं, इच्छाओं, आदर्शो और महत्वकाक्षाओं में संतुलन रखने की योग्यता से है। छात्रों के सीखने में सृजनात्मक क्षमता के वृद्धि के लिए यह बहुत आवश्यक है कि कक्षा–कक्ष का वातावरण खुला हुआ, मजाकियां एवं पूर्णतया स्वतंत्र होना चाहिए। जिसका तात्पर्य अपने जीवन की वास्तविकताओं का सामना करने और उनको स्वीकार करने की योग्यता से होता है।

संदर्भ ग्रन्थः–

1. जनरल ऑफ द इण्डियन अकेडती ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी वॉल्यूम,33
2. मनोवैज्ञानिक तथा शिक्षा शोध विधियॉ,प्रकाशन,भारती भवन, पटना
3. वन्या प्रकाशन भोपाल ।
4. पाठक ,डॉ. पी.डी.शिक्षा मनोवैज्ञानिक ,आगरा।

5. वर्मा डा प्रिती श्रीवास्तव,डा.डी.एन आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, आगरा।
6. अस्थाना बिपिन , श्रीवास्तव विजया, अस्थाना कु.निधि., (2012–131), सांख्यिकी एवं उसकी प्रकृति , शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा. पृष्ठ क्रमांक 459 –476

7. सिंह शिरीष पाल,(2009) सृजनात्मकता, षिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डीपो, मेरठ पृष्ठ क्रमांक 161 से 167 ।

8- Mohammad Ghufran and Zeba Qamar; Self concept ,Temperament ,Anxiety , Dependence –independence and adjustment of adolescent girls witnessing domestic violence N.S.Rohini & J Vijayalakshmi ; page 96-101Enhancement of adjustment in Alcoholics through positive therapy 93-104 skill and perceived home environment as predictors of mental health and adjustment problems among primary school children.